डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग, विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर, मधुबनी

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

बीए हिंदी प्रतिष्ठा, तृतीय वर्ष, अष्टम पत्र

मनोविश्लेषणवाद

आधुनिक युग में जिस प्रकार मनुष्य का जीवन जटिल और बहुमुखी होता गया। मानव – जीवन के उत्तरोत्तर जटिल होते जाने से इतनी समस्याएँ उत्पन्न हो गईं कि काव्य और नाटक में नहीं समा सकीं। मनुष्य की अनुभूति धारा सभी प्रकार के बाँध को तोड़, कविता और नाटक की शास्त्रीय सीमाओं को लांघकर अपने प्राकृतिक रूप में बह निकली। उपन्यास में आकर इस प्राकृतिक अनुभूति की अभिव्यक्ति को स्थान प्राप्त हो सका। उपन्यास में कविता की तरह ऊंची उड़ान तो नहीं थी परंतु उपन्यास ने मानव – जीवन के यथार्थ को अपना विषय बनाया और अपने आकार की विशालता में धीरे – धीरे मानव विकास के तीनों क्षेत्रों - भावात्मक, बौध्दिक और वैज्ञानिक को शामिल कर लिया। देश को राजनीतिक स्वतंत्रता तो बहुत बाद में मिली, पर हिंदी का साहित्यकार उससे डेढ़ – दो दशक पहले ही अपनी मानसिक मुक्ति की घोषणा कर चुका था। समाज की अंध – परंपराओं, उसके कृत्रिम – मूल्यों और निरर्थक मान – मर्यादा से व्यक्ति की आत्मा को मुक्त कराने के लिए वह जी – जान से जुट गया था। धर्म के पाप – पुण्य, समाज के विधि – निषेध तथा राजनीति के भय – प्रलोभन से ऊपर उठकर वह साहित्य – सृजन के माध्यम से व्यक्ति – सत्य की खोज में व्यक्ति – मानस की गहराइयों में उतरने लगा था। जैनेंद्र के 'सुनीता', 'त्यागपत्र' आदि उपन्यासों में इन मूल्यों की गहरी खुदाई करके मूल – नैतिकता की खोज शुरू हुई। अज्ञेय के 'शेखर : एक जीवनी' तक पहुँचते – पहुँचते तो साहित्यकार सामाजिक नैतिकता से भी ऊपर उठकर विज्ञान की अधुनातन उपलब्धियों के सहारे मानव – मन में कार्य – कारण के सूत्र ढूँढने लग गया था। हिंदी के साहित्यकारों की मानस – मुक्ति की यह यात्रा जितनी साहसिक थी उतनी ही उद्‌बोधक भी। व्यक्ति की शक्ति को वह पहचानने लगा था।

डार्विन, मार्क्स तथा फ्रॉयड के सिद्‌धांतों के प्रभाव से तथा वैज्ञानिक उन्नति और औद्‌योगिक विकास के फलस्वरूप सभी पुरातन, नैतिक और सामाजिक मूल्यों की अवहेलना तथा नए मूल्यों के आविर्भाव से व्यक्ति – स्वातंत्र्य का सूत्रपात हुआ।

डार्विन और मार्क्स की खोजों ने उपन्यासकार में भी नई जागृति ला दी। नए – नए आर्थिक और मनोवैज्ञानिक अनुसंधानों के प्रकाश में जीवन के प्रति उसका दृष्टिकोण बदलने लगा। फ्रॉयड के सिद्‌धांतों ने व्यक्ति – मानस और व्यक्ति – चेतना का जो रूप उद्‌घाटित किया था उससे उपन्यासकार को पता चला कि बाह्य संघर्ष ही सबकुछ नहीं है, वह तो बहुधा मानसिक संघर्ष की प्रतिच्छाया या उसका विकृत रूप होता था। बाह्य घटनाएं घटित होने से पहले ही व्यक्ति – मानस में कई घटनाएं घटित हो जाती हैं। बाहर के स्थूल संघर्ष से पहले उसे आंतरिक संघर्ष से जूझना पड़ता है। उपन्यासकार अनुभूति के विभिन्न स्तरों पर व्यक्ति – मानस में हो रहे संघर्ष के अचेतन कारणों की खोज में मनोविश्लेषणवाद की ओर प्रस्तुत हुआ। फ्रॉयड, एडलर, युंग के सिद्‌धांतों ने तथा स्टेकेल और हैवलॉक

एलिस की धारणाओं ने उसे नई दृष्टि दी। इस नई दृष्टि के फलस्वरूप साहित्य में कोरी भावुकता का स्थान मनोवैज्ञानिक प्रणालियों ने ले लिया। साहित्यकार अनुभवी मनोविश्लेषक की तरह मनोविश्लेषण, स्वप्न विश्लेषण, शब्द – संस्मृति, परीक्षा आदि विविध प्रणालियों के सहारे व्यक्ति मानस की अतल गहराइयों को मापने लगा। अब उपन्यास नायक – प्रतिनायक के संघर्ष की कथा नहीं रही अपितु वह नायक के चेतना – प्रवाह (स्ट्रीम ऑफ कॉन्शसनेस) तथा उसके अन्तर्विवादों (इंटीरियर मोनोलॉग) की कथा हो गई। मनोविश्लेषणवाद का प्रवर्तक फ्रॉयड को माना जाता है। फ्रायड ने मानव – मष्तिष्क के तीन भाग माने हैं - चेतन, अवचेतन और अर्ध - चेतन। उन्होंने काम और व्यक्ति की दमित भावनाओं को सर्वाधिक महत्व दिया। फ्रायड के शिष्य एडलर ने काम की जगह अहम को मुख्य माना जबकि उन्हीं के एक अन्य शिष्य युंग ने दोनों को एक साथ रखा। हिंदी में इलाचन्द्र जोशी, जैनेंद्र, अज्ञेय आदि इसी सिद्धांत से प्रभावित साहित्यकार हैं। मनोविश्लेषणवाद की दृष्टि से मानव चरित्र को एक आइसबर्ग अर्थात हिमनग के समान माना जाता है, जिसका न्यूनांश ही जल के ऊपर दिखाई देता है और शेष बड़ा भाग जलमग्न रहकर उसके व्यक्त रूप को प्रभावित करता रहता है। हिंदी में मनोवैज्ञानिक उपन्यास के उदय से यह संभव हुआ कि उपन्यासकार हिमनग रूपी मानव – चरित्र के जलमग्न अव्यक्त और अचेतन रूप को प्रकाश में लाने के लिए सचेष्ट हो सके। हिंदी में मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की प्रचुरता के बावजूद प्रतिनिधि उपन्यासकारों के रूप में जैनेंद्र कुमार, इलाचन्द्र जोशी और अज्ञेय ही उल्लेखनीय माने जाते हैं। इन प्रमुख उपन्यासकारों के अतिरिक्त डॉ. देवराज, धर्मवीर भारती, प्रभाकर माचवे, नरेश मेहता, रघुवंश, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, भारतभूषण अग्रवाल आदि।